IJAER/ March-April 2020/Volume-9/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

सृजन एक स्वाभाविक शैली

बसंत कुमार

सहा प्राध्यापक शिक्षा विभाग

गुरु घसीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़

सृजनात्मकता व्यक्ति का एक स्वाभाविक गुण है हर वह व्यक्ति जो सामान्य सोचने समझने की शक्ति रखता है वह सृजनात्मक है और वह व्यक्ति जो सोचने और समझने और करने की सामान्य से कम क्षमता रखता है उसका जीवन ही सृजनात्मक है|

सृजनात्मकता व्यक्ति का एक स्वाभाविक गुण है हर वह व्यक्ति जो सामान्य सोचने समझने की शक्ति रखता है वह सृजनात्मक है और वह व्यक्ति जो सोचने और समझने की सामान्य से कम क्षमता रखता है उसका जीवन ही सृजनात्मक है| इस वक्तव्य की विवेचना का बीज एक व्यक्ति अध्ययन से प्रस्फुटित हुआ एक दिन एक आवश्यक कार्य हेतु में में जा रहा था तभी रास्ते में मेरी गाड़ी पंचर हो गई पास की पंचर ठीक करने की दुकान में गया तो निराश हाथ लगी उसने कहा की पंचर बनाने का समान नहीं है तो में वही पास में पेड़ के नीचे गाड़ी खड़ी करके टायर में घुसे कील को निकालने की कोशिस करने लगा अचानक सामने से एक बालक जो की पक्षाघात से प्रभावित था उसके मुह से लार टपक रही थी,ठीक से चल नहीं पा रहा था ना ही कुछ पकड़ने के सक्षम था चिंतन शील मुस्कुराहट के साथ मुझ तक आया और उसने आगे की दुकान का रास्ता बताया साथ ही वह मेरी गाड़ी में हुए पंचर के कारणों को जानने की कोसिस करने लगा, में कील निकालने में असफल होने बाद अन्य आने जाने वालों से मदद के लिए बातचीत करने लगा पर यहाँ भी निराश ही हाथ लगी वह मेरे क्रिया क्रियाकलापों का शांत स्वभाव से अवलोकन कर रहा था अंततः में उसके द्वारा बताई गई दुकान जाने निर्णय लेके जैसे ही गाड़ी को स्टैन्ड से उतार वह हर्षित होकर मेरे साथ हो लिया साथ ही वह मेरी पंचर गाड़ी को पीछे से धक्का देने लगा और जब में पंचर बनाने की दुकान पहुँचा तो सृजन मुझे सर्वोत्तम जगह पर पहुचा कर वह से बिना बताए गायब हो गया |

सृजन हर व्यक्ति का स्वभाव है यह जन्म जात प्रवत्ति है जो हर जीव में विद्यमान है जो शिशु अपनी माँ के पेट से सीख कर आता वह जो कुछ भी करता है वह उसका अपना होता वह उसका सृजन होता है उसके द्वारा होता है क्योंकि जो कुछ भी वह करता है वह उसका मूल होता है उसमें किसी का कोई हस्तकक्षेप नहीं होता है, उन कठिन परिस्थितियों में उतनी सीमित जगह में जिसमे उसके आकार के लगभग बराबर जगह होती है उसमें किए गए कार्य के लचीलेपन का मापन तो संभव नहीं है क्योंकि उसकी व्यापकता मापन के दायरे से कहीं व्यापक है उसके कार्य के प्रारंभ तक अंत तक कहीं कोई संशय नहीं है शंका नहीं है, उसमें कोई त्रुटि या सुधार की आवश्यकता नहीं होती है उसके कार्य का प्रत्येक पद निर्धारित है पहले का पद बाद के पद से तारतम्यता है अपितु भविष्य तक के कार्यों की तारतम्यता और जिसका प्रारंभ और अंत निर्धारित है चाहे वह कार्य पूर्ण हो या ना हो | जब शिशु माँ के गर्भ से बाहर आता है तो माँ उसे बाहर नहीं लाती यह वह शिशु ही निर्धारित करता है की उसे कब बाहर आना है और इस कार्य के लिए वह खुद पहल करता है तात्पर्य यह है कि सृजन करने के सभी गुण मौलिकता, लचीलापन,व्यापकता,पूर्णता, समायोजन,कठिन परिस्थितियों में अपने आप को

धेर्य के साथ समायोजित,संतुलित रखने की कला और पहल करने का बल उसको उसकी माँ के पेट में ही मिल जाता है| यह कहने में मुझे कोई शंका नहीं है कि हर माँ अपने बच्चे को सृजन करने के गुणों से परिपूर्ण करके उसे इस धरती पर लाती है और यही हमारे जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए|

'Creativity is multidimensional verbal and non verbal attribute differentially distributed among people and include chiefly the factors of seeing problems fluency, flexibility originality inquisitiveness and persistence.

बी के पासी

'Creativity is the ability to produce or develop original work, theories techniques or thought'.

AMERICAN PSYCHOLOGICAL ASSOCIATION

उपरोक्त अन्य परिभाषाओं के अध्ययन से मेरा विश्वास और भी प्रबल हो जाता है कि सृजन एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसके गुणों की नीव माँ के गर्भ में ही रख दी जाती इन गुणों को शिशु माँ के गर्भ में ही धारण कर लेता है|

सृजन से तात्पर्य रचना करने से है और अच्छी रचना वह होती है जो पूर्ण हो जिसका प्रारंभ और अंत हो, जिसमें किसी प्रकार की बाधा ना हो जो क्रमबद्ध, व्यवस्थित हो, जो लचीली हो मौलिक हो

Creation means creating some thing and a good creation is one which is complete, has a beginning and an end does not have obstacle, is orderly, organised, flexible and has a master.

अतः किसी भी रचना को मौलिक, पूर्ण, क्रमबद्ध, लचीली , बाधा रहित रचित करने के गुणों के समूह को सृजनात्मकता कहते है|

The group of attributes to create in an original complete orderly flexible and without any hindrance is called creativity.

सृजनात्मकता कई रूपों में हो सकती है वह विचार के रूप में हो, किसी वस्तु के रूप में हो, किसी युक्ति के रूप में हो या किसी अवसर के रूप में हो यह किसी भी कार्य को करने के लिए गुणों का समूह है जिस व्यक्ति में इन गुणों की मात्रा जितनी होगी वह व्यक्ति उतना ही सृजनात्मक कहलाएगा| सृजनात्मकता की विवेचना किसी एक या कुछ गुणों के रूप में नहीं की जा सकती है, यह विभिन्न गुणों के समंजशयपूर्ण परिणाम के रूप में परिलक्षित होती है, जिनका विकास परिस्थितियों पर निर्भर करता है यह जरूरी नहीं है की सभी व्यक्तियों में इन गुणों का विकास समान रूप से हों या सारे के सारे गुण भी विकसित इनकी मात्रा एवं संख्या परिस्थिति पर निर्भर करती है|

यह व्यक्ति की मूल प्रवित्ती है जो की परिस्थितियों से सकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है यह जरूरी नहीं है की नकारात्मक परिस्थितियों का प्रभाव नकारात्मक हो यह सकारात्मक भी हो सकता है|

सृजन 16 वर्ष का जन्म से ही दिव्यंग है जिससे में पहले कभी नहीं मिला था जो की शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर है परंतु उसने बहुत ही कम समय में विचारों को रचा, वह किसी के कहने या निर्देशित करने के कारण नहीं अपितु ये उसके मौलिक विचार थे| जिसके कारण टायर में घुसे कील को बाहर निकालने की युक्ति के रूप में परिलक्षित हुआ| अतः कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता के गुणों का विकास केवल सामान्य व्यक्तियों ही होता है| यह एक जन्मजात गुणों का समूह है जो कि परिस्थितियों में विकसित होता है और शैली के रूप में प्रतिबिमवित होती है| अध्ययन जारी है